अध्याय 32.
मन्दिर जाने की विधि

1. मन्दिर जाने की विधि क्या है ?

देवदर्शन हेतु प्रातःकाल स्नानादि कार्यों से निवृत्त होकर शुद्ध धुले हुए स्वच्छ वस्त्र (धोती-दुपट्टा अथवा कुर्ता-पायजामा) पहनकर तथा हाथ में धुली हुई स्वच्छ अष्ट द्रव्य लेकर मन में प्रभुदर्शन की तीव्र भावना से युक्त, नंगे पैर नीचे देखकर जीवों को बचाते हुए घर से निकलकर मन्दिर की ओर जाना चाहिए। रास्ते में अन्य किसी कार्य का विकल्प नहीं करना चाहिए । दूर से ही मन्दिर जी का शिखर दिखने पर सिर झुकाकर जिन मन्दिर को नमस्कार करना चाहिए, फिर मन्दिर के द्वार पर पहुँचकर शुद्ध छने जल से दोनों पैर धोना चाहिए ।

मन्दिर के दरवाजे में प्रवेश करते ही **ॐ** जय जय जय, निस्सही निस्सही निस्सही, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु बोलना चाहिए, फिर मन्दिर जी में लगे घंटे को बजाना चाहिए। इसके पश्चात् भगवान् के सामने जाते ही हाथ जोड़कर सिर झुकावे, एवं बैठकर गवासन से तीन बार नमस्कार कर तथा खड़े होकर णमोकार मंत्र पढ़कर कोई स्तुति, स्तोत्र पाठ पढ़कर भगवान् की मूर्ति को एकटक होकर देखकर भावना करें जैसी आपकी छवि है, वैसी ही वीतरागता मुझे प्राप्त होवे, जैसे आप सिंहासन आदि अष्ट प्रातिहार्यों से निर्लिप्त हैं, वैसे ही मैं भी संसार से निर्लिप्त रहूँ, साथ में लाए पुञ्ज बंधी मुट्ठी से अंगूठा भीतर करके अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, ऐसे पाँच पदों को बोलते हुए बीच में, ऊपर, दाहिने, नीचे, बाँये तरफ ऐसे पाँच पुञ्ज चढ़ावें। फिर जमीन पर गवासन से बैठकर, जुड़े हुए हाथों को तथा मस्तक को जमीन से लगावें तीन बार नमस्कार कर तत्पश्चात् हाथ जोड़कर खड़े हो जावें और मधुर स्वर में स्पष्ट उच्चारण के साथ स्तुति आदि पढ़ते हुए अपनी बाँयी ओर से चलकर वेदी की तीन परिक्रमा करें। तदनन्तर स्तोत्र पूरा होने पर बैठकर गवासन से तीन बार नमस्कार करें। परिक्रमा देते समय ख्याल रखें कोई नमस्कार कर रहा हो तो उसके आगे से न निकलकर, पीछे की ओर से निकलें। दर्शन करने इस तरह खड़े हों तथा इस तरह पाठ करें जिससे अन्य किसी को बाधा न हो। दर्शन कर लेने के बाद अपने दाहिने हाथ की मध्यमा और अनामिका अङ्गुलियों को गंधोदक के पास रखे शुद्ध जल में डुबोकर शुद्ध कर लेने पर अङ्गुलियों से गंधोदक लेकर उत्तमांग पर लगाएं फिर गंधोदक वाली अङ्गुलियों को पास में रखे जल में धो लेवे। गंधोदक लेते समय निम्न पंक्तियाँ बोलें।

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदकं वंदे, अष्टकर्म विनाशनम्॥

इसके पश्चात् नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ते हुए कायोत्सर्ग करें। फिर जिनवाणी के समक्ष ''प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः'' ऐसा बोलते हुए चार पुञ्ज चढ़ावें। तथा गुरु के समक्ष ''सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः'', ऐसा बोलकर तीन पुञ्ज चढ़ावें। तदुपरान्त शास्त्र स्वाध्याय करें एवं मन्त्र जाप करें, फिर भगवान् को पीठ न पड़े ऐसे विनय पूर्वक अस्सहि, अस्सहि, अस्सहि बोलते हुए मन्दिर से

बाहर निकलें।

2. **देवदर्शन किसे कहते हैं ?**

देव का अर्थ वीतरागी 18 दोषों से रहित देव और दर्शन का सामान्य अर्थ होता है देखना, किन्तु यहाँ पूज्यता के साथ देखने का नाम दर्शन है। अतः पूज्य दृष्टि से देव को देखने का नाम देवदर्शन है।

3. **मन्दिर जी आने से पहले स्नान क्यों आवश्यक है ?**

गृहस्थ जीवन में पञ्च पाप होते रहते हैं, जिससे शरीर अशुद्ध हो जाता है। अतः शरीर की शुद्धि के लिए स्नान आवश्यक है।

4. **मन्दिर जी में प्रवेश करते समय पैर धोना क्यों आवश्यक है ?**

रास्ते में आते समय पैरों में गंदगी लग जाने के कारण पैर धोना आवश्यक है, मन्दिर एक पवित्र स्थान है, उसकी मर्यादा रखनी चाहिए।

5. **मन्दिर जी में प्रवेश करते समय निस्सहि-निस्सहि-निस्सहि क्यों बोलना चाहिए ?**

प्रथम कारण तो यह है कि मैं दर्शन करने आ रहा हूँ, अतः वहाँ कोई श्रावक या अदृश्य देव, दर्शन कर रहे हैं, वे मुझे दर्शन करने के लिए स्थान दें। दूसरा कारण यह है कि मैं शरीर पर वस्त्रों के अलावा शेष परिग्रह का निस्सहि अर्थात् निषिद्ध करके या ममत्व छोड़ करके पवित्र स्थान में प्रवेश कर रहा हूँ। तीसरा कारण यह है कि इस जिनालय को नमस्कार हो।

6. **मन्दिर जी में घंटा क्यों बजाते हैं ?**

मन्दिर जी में घंटा बजाने के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं -

1. घंटा समवसरण में बजने वाली देव दुंदुभि का प्रतीक है।
2. जैसे ही घंटा बजाते हैं और घंटे के नीचे खड़े हो जाते हैं जिससे उसकी ध्वनि तरंगें एकत्रित हो जाती हैं, जिससे मन में शांति मिलती है एवं मन में अपने आप सात्त्विक विचार आने लगते हैं। घंटा पिरामिड के आकार का होता है। आज मन को शांत करने के लिए पिरामिड का बहुत प्रयोग किया जा रहा है।
3. अभिषेक करते समय घंटा बजाते हैं जो आस-पास के लोगों को जगाने का कार्य भी करता है कि अभिषेक प्रारम्भ हो गया है। मुझे मन्दिर जी जाना है। अतः घंटा समय का सूचक है।

7. **मन्दिर जी में चावल ही क्यों चढ़ाते हैं ?**

चावल ऊगता नहीं है, धान (छिलका सहित चावल) ऊगता है। अतः आगे हम भी न ऊगे अर्थात् हमारा भी जन्म न हो इसलिए चावल चढ़ाते हैं।

8. **प्रदक्षिणा किसकी दी जाती है एवं कितनी दी जाती है ?**

वीतरागी देव, तीर्थक्षेत्र, सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र एवं निर्ग्रंथ गुरु की तीन-तीन प्रदक्षिणा दी जाती हैं।

9. **प्रदक्षिणा क्यों देते हैं ?**

वेदी में विराजमान भगवान् समवसरण का प्रतीक है। समवसरण में भगवान् के मुख चार दिशाओं में अलग-अलग दिखते हैं। अतः चार दिशाओं में भगवान् के दर्शन के उद्देश्य से प्रदक्षिणा (परिक्रमा) देते हैं। तीन रत्नत्रय का प्रतीक है, अतः रत्नत्रय की प्राप्ति हो, इसलिए तीन प्रदक्षिणा देते हैं।

10. प्रदक्षिणा बायीं (Left) ओर से क्यों लगाते हैं ?

हमारे जो आराध्य हैं, पूज्य हैं, बड़े हैं, उन्हें सम्मान की दृष्टि से अपने दाहिने (Right) हाथ की ओर रखा जाता है। इसलिए प्रदक्षिणा बायीं ओर से लगाते हैं।

11. मन्दिर जी से वापस आते समय अस्सहि-अस्सहि-अस्सहि क्यों बोलते हैं ?

अस्सहि का अर्थ है कि अब मैं बाहर जा रहा हूँ देव आदि जिनने दर्शन करने के लिए स्थान दिया था वे अब अपना स्थान ग्रहण कर लें।

12. भगवान् के दर्शन करते समय किन-किन भावनाओं को भाना चाहिए ?

भगवान् के दर्शन करते समय निम्न भावनाओं को भाना चाहिए-

1. मैं भी आप जैसा बनूँ।
2. मेरे पाप कर्म शीघ्र नष्ट हों।
3. मुझे मोक्ष सुख की प्राप्ति हो।
4. संसार के सारे जीव सुखी रहें।
5. संसार के सभी जीव धर्म्यध्यान करें।
6. सारे नरक खाली हो जाएँ, सारे अस्पताल बंद हो जाएँ अर्थात् कोई बीमार ही न पड़े। सारे जेल बंद हो जाएँ अर्थात् कोई ऐसा कार्य न करे जिससे जेल जाना पड़े।

13. भगवान् के दर्शन करते समय किस प्रकार के भावों का त्याग करना चाहिए ?

भगवान् के दर्शन करते समय निम्न प्रकार के भावों का त्याग करना चाहिए-

1. धन-वैभव, पद आदि की प्राप्ति के भावों का त्याग करना चाहिए।
2. स्त्री, पुत्र, आदि की प्राप्ति के भावों का त्याग करना चाहिए।
3. उसका मरण हो जाए, वह चुनाव में हार जाए, उसकी दुकान नष्ट हो जाए, उसकी नौकरी छूट जाए, वह परीक्षा में फेल हो जाए आदि बुरे भावों का त्याग करना चाहिए ।

14. पाषाण या धातु की मूर्ति में पूज्यता कैसे आती है ?

पञ्चम काल में भरत और ऐरावत क्षेत्रों में अरिहंत परमेष्ठी नहीं होते हैं। उन अरिहंतों के गुणों की स्थापना पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आचार्य परमेष्ठी सूरि मंत्र देकर करते हैं। अतः इससे मूर्ति में पूज्यता आ जाती है। जैसे-17.8 से.मी. लंबे, 7.3 से.मी.चौड़े कागज का मूल्य अधिकतम 50 पैसा होगा उसी कागज में गर्वनर (Governor) के हस्ताक्षर (Sign.) होने से उसका मूल्य 1000 रुपए हो जाता है वैसे ही कम मूल्य की धातु या पाषाण की मूर्ति, सूरि मंत्र पाते ही अमूल्य हो जाती है, अर्थात् पूज्य हो जाती है।

15. मन्दिर जी में कौन-कौन से कार्य नहीं करना चाहिए ?

मन्दिर जी में निम्न कार्य नहीं करना चाहिए -

1. देव-शास्त्र-गुरुसे ऊँचे स्थान पर नहीं बैठना चाहिए।
2. कोई श्रावक दर्शन कर रहा हो तो उसके सामने से नहीं निकलना चाहिए।
3. पूजन, भजन, मंत्र इतनी जोर से नहीं पढ़ना चाहिए कि दूसरा जो पूजन, भजन, मंत्र कर रहा है वह

अपना पाठ ही भूल जाए।

4. नाक, कान, आँख आदि का मैल नहीं निकालना चाहिए।
5. शौच आदि को पहनकर गए हुए वस्त्र पहनकर नहीं जाना चाहिए।
6. अशुद्ध पदार्थ लिपिस्टिक, नेलपालिश, क्रीम, सेन्ट आदि लगाकर नहीं जाना चाहिए।
7. क्रोध, अहंकार नहीं करना चाहिए।
8. किसी को गाली नहीं देना चाहिए।
9. सगाई, विवाह, खाने, पीने आदि की चर्चा नहीं करना चाहिए।
10. दुकान, आफिस, राजनीति आदि की चर्चा नहीं करना चाहिए।
11. जूठे मुख नहीं जाना चाहिए।
12. चमड़े तथा रेशम की वस्तुएँ पहनकर नहीं जाना चाहिए।
13. मन्दिर जी में काले, नीले, लाल, भड़कीले तथा अश्लील वस्त्र नहीं पहनकर जाना चाहिए।

16. दर्शन करने से कौन-कौन से लाभ होते हैं ?

दर्शन करने से निम्न लाभ होते हैं -

1. सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है, यदि सम्यग्दर्शन है तो वह और दृढ़ होता है।
2. अनेक उपवासों का फल मिलता है।
3. असंख्यात गुणी कर्मों की निर्जरा होती है।
4. पुण्य का आस्रव होता है।
5. मन के अशुभ भाव नष्ट हो जाते हैं।
6. प्रातःकाल दर्शन-पूजन करने से दिन अच्छी तरह व्यतीत होता है।

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. चावल ऊगता है, इसलिए मन्दिर में चढ़ाना चाहिए।
2. मन्दिर से वापस आते समय अस्सहि-अस्सहि बोलना चाहिए।
3. भगवान् के दर्शन करते समय मैं मुनि बन जाऊँ ऐसी भावना भाना चाहिए।
4. कोई मुनि न बने, ऐसी भावना नहीं भाना चाहिए।
5. नरक खाली न हो, ऐसी भावना भानी चाहिए।

अन्यत्र खोजिए -

1. एकाङ्ग, द्विअङ्ग, त्रिअङ्ग, चतुरङ्ग एवं पञ्चाङ्ग नमस्कार किस प्रकार से होते हैं ?
2. पाँच प्रकार के स्नान कौन-कौन से होते हैं ?
3. भगवान् के दर्शन गजमोती चढ़ाकर करूँगी ऐसे नियम वाली कन्या की कथा खोजिए ?
4. एक मुनिराज ने श्रावक से कहा देवदर्शन नहीं कर सकते तो तुम्हारे घर के पीछे जो कुम्भकार है उसके गधा का दर्शन कर लिया करो, ऐसी कथा खोजिए ?